मान तीन : विषय भाषाम

उपशहर

-- गौथ बार
-- उक्तियाँ रूप निरीय
-- शौच स्बेल
वादवाद विषयाण

3 प हंगा र

3.1 शैव लार

सम्पूर्ण शैव प्रबंध की बारे मागर भाषाओं में विनिमय किया गया है। पहले मागर् पहले विषय की उपसारणित करने के बाद विषय सम्बन्धी शैव सामूहिक का सम्बन्ध किया गया है। शैव सम्बन्ध की वादवाद बना कर विषय विवेचन की शेष का विनिमय किया गया है तथा प्रस्तुत शैव प्रबंध हेतु प्रतिपादन के बाद अन्त में कामयाब की स्पर्श की अवरोगत किया गया है।

"शैवात्मिक पश्चिम" के बहुतों समाज एवं समाजस्वरूप का परिचय देते हुए समाजस्वरूप का अन्य परिपरिकरण, विश्वसनु, आलावर्ती और समाजस्वरूप के महत्त्व की निष्ठा किया गया है। समाजस्वरूप के समाजस्वरूप के बाद विवेचन और समाजस्वरूप के सम्बन्ध का विवेचन किया गया है। लारित्य के समाजस्वरूप का अन्य और परिपरिकरण की निष्ठा करते हुए साहित्य की समाजस्वरूप का परिचय किया है। शायर के समाजस्वरूप का अभ्यास के प्रभुत्व नादंशक विवेचन एवं संस्कृति विवेचन के विवेचन की विवेचन किया गया है। अन्त में साहित्य स्वरूप के बहुतों संस्कृति अवरोगत और व्यवस्था के तत्त्व, साहित्यिक उन्नतियाँ, उन्नति-संस्कृति, सामाजिक संबंध, मूलभंगा का सामाजिक विवेचन का कारण और समस्याओं का विवेचनात्मक विवेचन किया गया है जिसके रूप में दर्शाया है कि समाजस्वरूप का आयुर्विक समाज में महत्त्वपूर्ण स्थान है।
साहित्य में अनुसार व्यक्ति और समाज का पारास्परिक सम्बन्ध 
बहुत महत्वपूर्ण है। व्यक्ति है पारास्परिक श्रीवास, श्रीवास के लिए समाज दी साधन है। इन सामाजिक सम्बन्धों, मनुष्य की उन्नति के लिए, 
समाज की संरचना और उसकी निम्ति करने वाली हकारहर कार्य के द्वारा पारास्परिक 
सम्बन्धों का व्यवस्था समाज का विकास है। सामाजिक संरचना, सामाजिक 
संख्याएँ, प्रकार, सामाजिक सम्बन्ध, नातेदारी, प्राथमिक समूह, सहदाय, और, 
सामाजिक व्यवस्था, सामाजिक उन्नति क्रिया सामाजिक मूल्य है समाज का 
विषय है। समाज के निम्ति के सामाजिक सम्बन्धों का व्यवस्था करता है। 
साहित्य में समाज का का विषय है जो फिरी ही सामाजिक व्यवस्था 
की साधना का समाज का समाज का मूल्य सा और उसकी निराकरण के 
व्यापक विश्वास प्रदर्श करता है। 

शास्त्रीय समाज-शास्त्रीय के प्रत्येक युग का साहित्य अपने युग के 
सामाजिक सम्बन्धों और आवश्यकताओं की व्यक्त करता है। समाज दी साहित्य 
का दावार है। समाज की परिस्थितियाँ के अनुसार साहित्य का निर्माण होता 
है। साहित्य और समाज के उदाहरण का सम्बन्ध है। दोनों की 
व्यक्ति, समाज और संरचना की अपनी व्यक्ति विषय में निराकर करते हैं। दोनों 
का सम्बन्ध समाज की व्यवस्था है। साहित्य समाज के विद्वान पत्रकार 
का अंकन करता है। साहित्य सामाजिक संघ, मूल्य, सामाजिक सम्बन्धों की 
प्रतिफल, स्वरूप, सामाजिक विधिवत, परिस्थितियाँ का निर्माण करता है जो समाजवादी 
व्यवस्था का विषय है। साहित्य और समाज दी साधना का यह समाज दी साहित्य 
मूल्य है। साहित्य का समाज के निम्ति शास्त्रीय व्यवस्था का विषय करता है। कृति के पाठमान है साहित्यिक उत्तराल, विकास 
के द्वारा समाज के समाज के निम्ति करते वाली विद्वान हकारहार के प्रकार, 
सामाजिक प्रक्रियाओं और बनाम प्रक्रियाओं
का वचन करने वाला विश्वन है। सामाजिक संस्कार एवं साहित्य में वर्णित लूक्स में सामाजिक इस वचन की पुष्टि करता है कि साहित्य में सामाजिक संस्कार एवं साहित्य में सामाजिक संस्कार विशेष का प्रणय विशेष करता है। साहित्य में सामाजिक संस्कार एवं वाणी की विवाद के साथ की सामाजिक संस्कार में जी धार्मिक नाटक व धार्मिक संस्कार के अभ्यास नाटक के लिए कहा है।

समकालीन नाटकों में अभ्यास सामाजिक संस्कार और सामाजिक संस्कार का अभ्यास करता है। सामाजिक संस्कार का अभ्यास है। अभ्यास होता है। सामाजिक संस्कार का अभ्यास नाटक में जी धार्मिक संस्कार का अभ्यास है। सामाजिक संस्कार का अभ्यास है। सामाजिक संस्कार का अभ्यास है। सामाजिक संस्कार का अभ्यास है। सामाजिक संस्कार का अभ्यास है। सामाजिक संस्कार का अभ्यास है। सामाजिक संस्कार का अभ्यास है। सामाजिक संस्कार का अभ्यास है। सामाजिक संस्कार का अभ्यास है। सामाजिक संस्कार का अभ्यास है।

परिकल्पना क्रिया का नियम है। सामाजिक का वाणिज्यित संस्कार एवं साहित्य की विवाद की विवाद का नियम है। सामाजिक के विवाद का नियम है। सामाजिक के विवाद का नियम है। सामाजिक के विवाद का नियम है। सामाजिक के विवाद का नियम है। सामाजिक के विवाद का नियम है। सामाजिक के विवाद का नियम है। सामाजिक के विवाद का नियम है। सामाजिक के विवाद का नियम है। सामाजिक के विवाद का नियम है। सामाजिक के विवाद का नियम है। सामाजिक के विवाद का नियम है।
परस्पर सामर्थ्य की मात्रा का हीना जापान है। किसी सम्बन्ध में पति-पत्नी सम्बन्ध में तनाव विषम है जिससे परिवार विघटन की विशेषता है। बाबू के पारिवारिक सम्बन्ध में वसन्तकुल, पतिमान, नारी शिलाल, स्वाभाविक, व्यक्ति स्वास्थ्य की मात्रा, मृत-पापा, पारिवारिक मूल्य, वृष्टिविश्वास वाबिल ने दाम्पत्य जीवन में वसन्तों से संबंधों की विद्या है।

समस्याशास्त्रियों के दृष्टिकोण में नारी का वापसी रूप है बालकरियों हीना दाम्पत्य-सम्बन्ध में विघटन का भाग एक प्रमुख कारण है। पति की शिक्षा और बालकरियों की अपने स्वास्थ्य व्यक्तित्व है। "विना दीवारे के घर" में बीमा में विधिवत्ता सम्बन्ध में विघटन है जिसे उसका पति क्षण नहीं कर पाता। नारी वपसी स्वास्थ्य की विशेषता में नूतन या नहीं नूतन भावना बनाती। इसीलिए यह पति का घर कोई दैवी है। दैवीतिक पैद और रूपक हैं बनना है तथा विकास है। नारी दाम्पत्य सम्बन्ध में विघटन की विशेषता से परिवार में संगठन के स्थान पर विषम की विशेषता दिखाई है। अन्याय हुए समस्याशास्त्र इस विचार है कि परिवारिक विघटन परस्पर सम्बन्धों की विभिन्नता, वसन्तकुल, नूतनकरण है। नारी के विशेष भाव है सत होता है कि परिवारों में विघटन की प्रक्रिया तीव्र है। इन परिवारों में नियन्त्रण की विभिन्नता एवं संदर्भों में परिवारिक निष्ठा का अभाव है। विवाह विवेक, नूतनकरण, सम्बन्ध में नूतन, यौन व्याप्तिस्थापन, प्रकट में विशिष्टता बादि प्रारंभिक हतियार है। "प्रारंभिक" में सुलभा-प्रमोद, वपन-वापनी व व्याप्ति-विवेक, "विघटन की दृष्टि" में तारा-विघट, "पति न होने" में वधिरण-प्रविधि, नूतनकरण "संबंधों" में जिसे न किसी प्रकार का तनाव एवं नूतनकरण की विशेषता विषम है। मूल की विनाश किरण से मूल की फसल किरण में जीवन-हीराक के दाम्पत्य जीवन में नूतन यौन व्याप्तिस्थापन का कारण है। पति-पत्नी के वहाँ बालकरियों होने पर दाम्पत्य सम्बन्ध विघटन हो रहे हैं।
वार-वृत्त में साहित्य, जनरि का गृह में कृमि, केद और अरकनः नीतिसंपन्न रूप-वैज्ञानिक कामकाजः में नामबने के महत्वपूर्ण होने के कारण उनके पारिवारिक जीवन में नाना व्याख्या है। तनाव, अज्ञात एवं उपचन समस्यायां तथा परिस्थितियों की तिथि प्रभावित नै परिवार की स्थिति को प्रभावित किया है। परिवार के रूपमात्रता सम्पन्न में तनहुँ, मातृका का स्थान सारकार अथवा अतीतता का स्थान है। लेकिन नहीं है दिया है। एवहार बाप के परिवार, त्रिविध निर्देशन के स्थान पर्यावरण तथा हस्तलक्षण का विषय की रचना है। एवहार में विकसित समाझ में स्थान स्थापित नहीं है बिना दिया है। इस में हस्तलक्षण निर्देशन की पासणा, कृतिकृतांतर, तथा ओहर महत्वकृति के समावेश होने से तनाव तथा विघटन की स्थिति है। वार-वृत्त, दुर्गति परिवेश, वस्त्राभ, पाखियां, सार्क-सारिया, चिन्दिया की एक फाता, युन-युन गतिविधि, ठहरा हुआ पानी, तीसरा हाथी, देहु बनाए नाटक के रूपमात्रता सम्पन्न में तनाव की स्थिति है। इसीं हस्तलक्षण निर्देशन के स्थान सार और परिवाराणारे कायकारिणी सम्पत्ति जो रूपवन, बुढ़ा, भेंठी पर विवाहित है, उन हस्तलक्षण में परिवारानात्वक व्यक्तार प्राप्तव्य काल नहीं है। हस्तलक्षण में प्राप्तव्य, तनाव तथा क्षेत्रीयता दृष्टिव्यूहर पड़ती है। जिसी मूल ने अविष्कार कारण और स्वामी की पासणा निर्देशित है।

परिवार स्त्री की कृतिकृतांतर स्त्री है। परिवार और संज्ञानतक पता पर विचार करते है जल्द होता है कि परिवार का ज्ञान निर्माण दौड़ नहीं है। इसका परिवार निर्देशित हो रहे है। स्त्रीमात्र के विद्वानों की एक पाठ्यकृत है कि समुद्र परिवार में कस्थ घुटने, खर्र और जलज्ञान अथवा परिवारीय सम्पत्ति में समुद्र परिवार को अनुसूचित पिता करते है। इसके मूल में व्यक्तिगती मूल्य, भोजनकर्म एवं नाराय स्वाक्षरता की मापना है। नसी कीय समूक परिवार के पता नहीं हैं। युन-युन गतिविधि का प्रीति, दुर्गति परिवेश
का विवेक हस्ते पता नहीं है। संबंध परिवार ही नहीं, बालाकविक परिवार भी
ब्राह्मणिक संस्कृति होने के कारण किशत्व हो रहे हैं। "नन्देश, नौकी,
बाघ-बामी, अस्तर हुआ पानी" के परिवार भी ही किशत्व परिवार है।
किशत्वों की दुष्टिम ए सत्तालए के युग की बालाकवि, नीयी की
स्वतंत्र पुष्टि बोरी पीड़ियाँ में ब्राह्मणिक अन्तर होने के कारण बालाकविक परिवार
विषयन की स्थिति में है।

परिवार एका के परमारंग मान्यताओं में परिवर्ती है साथ ही
बालाकवि बोरी ब्राह्मणिक हस्ताक्षरों में भी परिवर्ती परिस्थितियों है। यात्राकिरण
परिकल्पना का गति का स्वरूप है सामाजिक परमारंग रूपसे में सर्वाधिक उत्तरान
की है। साताक्षरियों की दुष्टिम ए सामाजिक परिवर्ती का बालाकवि तस्वीर की
दृष्टि में परिवर्ती, युगाधिक बुद्धिरु-सन्तान, मंगल बोर परिवर्ती की चारणा है।
बालाकवि हस्ताक्षरों में की दुष्टिम साताक्षरियों ए सामाजिक
किरण हैरानियाँ है। साताक्षर यो अनुसार की दुष्टिम, बालाकविक
परिवर्ती की सर्वाधिक वट, पक्ष बोर परिवर्ती की चारणा है। कर्म
बालाकविक युगाँ ए बुद्धिरु मूल्यों का प्रतिपादक है। कल्यान युग में कर्म की
सत्तिम परमारंग चारणा में परिवर्ती बाला है। कर्म की पक्ष दिख जाने के
कारण, बालाकवि व्यक्तिवादित है कारण कर्म के विवाहा, वृत्त, इत बादी है
विवाह विवाहित जग पढ़ गए हैं। कल्यान युग में परमारंग वातानुसार, मान्यताएं,
बालाकविक युग बालाकवि बालाकवि परिवर्ती प्रायोगिक हो रहे हैं।
चक्कर उस पर विघ्नाष बुरा है। विघ्न कर्म नहीं पाठानीवित्त में उसकी वास्ता
बड़ी है। क्षण, एवं, नायर की परिवर्ती है निश्चित कर वास्तविक,
प्रायोगिक, विकेक एवं की विशिष्ट विवाह पर अन्वेषन हो रहा है। विघ्न बालाकवि
किरण ने प्रायोगिक कारण कुछ पीड़ी वातावरिक मान्यताओं का विरोध कर रही
है। कर्म की वास्तविक प्रकृति बालाकवि एवं विवाहावर का बाल अश्लील है।
पाप-पुर्यां वातायिक
किरण, इत्यादि, नायर आपित की गति की पीड़ी में बालाकवि का बाल
है। यापि पुरानी पीड़ी इसमें बाल की वास्ता रक्ष्या है। कर्म के गति विवाहा
रूपी माझे छोटे बाप का था। "टूटते-परिशेष" में विश्वास, "स्वाभाविक -स्वाभाविक" में पुराना खुश, "कामयाब" में कुक्री, "केवल के प्रति, ऊर्जाके उपस्थिति में विश्वास रखते हैं। नयी पीटी मार्गवांड की मान्यता की कारण नहीं है। उन्होंने पुराना अपने प्रति है उसका मार्ग कहता है। वह यादों की निकाल करता है। "झटके-झटौड़" में निकट, "टूटते परिशेष" में ही रित्वे विके "झटके-झटौड़" विके क्षु ऐसा मानते हैं। स्पष्ट है कि मार्गवांड संपत्ति में बाप परिवार वह ये हैं जिसका मार्ग मार्गवांड संपत्तियों वसे जीवन पूर्विक पर पड़ रहा है। फलस्वरूप वह का मार्ग की जाह वुड़े है और आतिथ्य का जाह लम्बे संचालित करने लगा है।

अभिव्यक्ति मानते हैं कि शिक्षा कल्याणा अक्षरों की कल्याणा पूर्ति संस्था प्रक्रिया है जो व्यक्ति के जीवन की विचारण रोप पर प्रभावित करती है। शिक्षा का उदेश्य व्यक्ति नै विचारण विचारण का विकास कराता है। कल्याणा परिदृश्य प्रक्रिया में शिक्षा का फल देने के बारे में कल्याणा को समझने की प्रति प्रक्रिया करती है और मार्गवांड परिदृश्य परिदृश्य का प्रेरणा देता है। अब तैयारित कल्याणा में भी परिदृश्य स्थितियों होता है। कल्याणा पूर्व में शिक्षा की प्लांट दुष्कर्ष के परतु जीवन में उक्ता पाटुएन का समान है, कह शाखा की स्थापना करने वाली। दूसरी बारे में प्रति शाखा में बहुत भारी है। एक विशेष बाद शाखा में मार्गवांड का प्रति रूप रूप का बनाया है। शाखा-मार्गवांड संपत्ति में तनाव है। शाखा में अनुशासन प्रक्रिया की वुड़े हैं। दौरान पूर्वी शिक्षा मार्गावली की कारण शाखाएँ के अर्थ की समस्या भरते हैं। "झटके-झटौड़" "नुतक-पुलिस" "आत्म-प्राणित प्रातिरिक" "टूटते परिशेष" "विचारण" की एक कारण "विचारण" नाटका में उपरुक्त प्रक्रियाओं का निर्माण है।

अभिव्यक्ति मानते हैं कि वौकारी करण वसे नागरी करण की प्रक्रिया ने मनुष्य के पारस्परिक संस्थाओं, उनके विचार-बदलारों, विचारणों, संस्थाओं,
रीति-रिवाजों में संस्कृता की स्थिति पैसा की है जिसके फलस्वरूप मनुष्य के जीवन में कोई परिवर्तन, नाला एवं सामस्याओं पेवा बुझे है। नाटकों के विशीर्षण में जाता होता है कि पीयूष कथन कल्पनीय समस्या है। नतीज को गुरुवारी पीढ़ी के बीच वेतास्तिक कि निम्नलिखित होने के कारण समस्याओं में तनाव और उसके सामर्थ्य पेवा बुझे है। समाज का वर मात्र संस्कृत की प्रक्रिया है गुजर रहा है। यह प्रक्रिया एक व्यक्ति के नाटक सबसे महत्वपूर्ण जाति की समाजविधि प्रक्रिया है। पुरानी पीढ़ी किंतु मूल्यों और परम्पराओं का पालन युवा की है लिए जापराक नावती है, नतीज पीढ़ी उन्हें निर्धारी और अनुसंधान कर त्याग रही है। वाज का युवा जरूरी का जीवन दस्ती पुरानी पीढ़ी के जीवन दस्ती है मिलन है। नतीज पीढ़ी कर गायब संस्कृत में सक्षमता वाजती है बाल और विस्तृत बप्पी सक्षमता राय रहती है। युवा फलस्वरूपी निगमय युवा पीढ़ी सर्व की है। नाटकों में पीढ़ी संस्कृत "संगीत यात्रा" "टुटी परियेर" "सांके-खेरा" "प्रांसी" "दूरी-दूरी ग्रांट" "विनिदया" की एक कार्य "वार-वहुं" में उपनिर्माण हुआ। वाज की युवा पीढ़ी परिवर्तन रहन- खान, सम्भव योग संक्षिप्त के कारण में बनने बेख ये सांस्कृतिक मूल्यों को नकार रहती है। बाह्य अर्थिक में युवा पीढ़ी परसात तपास के अक्कुराग के कारण प्रतिकृत है।

"समाजीय नाटकों में क्षेत्रान्ता नाटक दरम्यान नैतिकता" के अस्ताहित परस्पर सम्बन्धों में की कुम्मा, परस्पर नाटक के नैतिकता का नाटकों में संगम में अर्थात समलयाएँ का चिन्ह दिखा गया है।

"व्यापकता-करण" एवं "नारी-करण" की प्रक्रिया न सामाजिक, अर्थात एवं राजनीतिक दृष्टि की व्यापक रूप से प्रकट किया है। सामाजिक समस्याओं में व्यापक रूप से परस्पर के फलस्वरूप अनेक परिवर्तन के रूप में हुए हैं। कार्यकलाप के कारण मौजिकवादी कैसल ने बहुत मिला है।

मौजिकवादी कैसल के कारण वास्तव समझने की निर्धारित करने वाली पुरी
वान के पहच दिया जाने लगा है किसी कारण परम्परित मुद्यां के प्रति अनायास बढ़ती है। वाज के लिए लघु लघुया का खेलका चिंता मान दिया गया है। पनाहिसंस ने बालाकेश सारी पति-पत्नी के सम्बन्ध तक को कूटना दिया है। पति-पत्नी के सम्बन्ध में "किर" के कारण तनाव व्याप्त है। "रात-रात्री, पति-पत्नी सम्बन्ध में "किर" के कारण तनाव व्याप्त है। "रात-रात्री, विराग की हो; वाणिज्य की अपनी क्षमा और 'बादौर कूरे' में दामपल्लु हमने द्वार और कारण के कारण हृदय पुरुषों है। वाज व्यक्ति का दुहित- डूंगर परिसंवचन हो गया है, कह का किती सब कुछ मानता है। कह के कारण व्यक्ति-प्रज्ञां है नामपरिक तत्त्व निरूपित हो गया है और व्यक्ति के उपरी सबसे अव्यक्ति का स्वर हो जाता है। व्यक्ति परिसंवचन दुहित-डूंगर के कारण का किती सब कुछ मानता लगा है। यही कारण वाज के व्यक्ति ने कारण ज्ञान में साथ की नैतिकता को लगाने दिया है। दुहित-डूंगर बार, "सुधे की विधिमार्ग फिराक" से पूर्व फिराक तक, "कैपैलेरियर, "विचित्रियाँ का एक पाल, "किरे, "कैपी" नाटकों में व्यक्ति की कर है।

समाजस्वरूप के अनुसार नैतिकता वापरिक नियमों की यथायोग्यता है। नैतिकता का सबसे ध्यान के कार्यकर है। नैतिकता का ध्यान व्यक्ति प्रति हृदया दे करता है। वाज के कारण युग में कहा व्यक्ति का हृदय देने कुछ बार के पीछे नालौ रहा है, दूहित-डूंगर और, समाज में है। यह व्यक्ति की है जो नैतिकता का निवाश करते हैं और परम्परित नैतिक पारंपरिक के बाद में से जो वापस का सिद्धान्त मानता है। विराग की हो, "फिलार, नसम, मिथ अवधिपुंड" का लालल, "विचित्रियाँ का एक पाल" का नलन, "कैर" "है वास्तव में सभी बादलों और वादों पर विषय परम्परित नैतिकता का निवाश करते हैं।

वाज के युग के कर-प्रसार संस्कृति के भारतीय संस्कृति है नैतिक मूल्यों की नियादित कर दिया है। समाज में व्यक्ति नैतिक कार्यों को बुखार
देख है निकट वैज्ञानिक विधान छुआ है। समाजवादियों की दृष्टि में वैज्ञानिक विधान में घातक नान्का ग्राम प्रतिवाद के विपरीत व्यक्ति की अनु- 
व्यक्ति होती है। वाज द्याव, थमा, परिपालन, कर, काश-परायणता, 
इत्यादी, समस्या और नैतिक की नैतिक उपायोगिक को अधि प्रशासन संस्कृति 
न ही नियम कर है। इसी कारण वाज व्यक्ति द्वारा नैतिक प्रशासन का 
मजक उत्तर्त है। उन्हें द्याव रहता है। वापरिक युग में नैतिक अपरिच 
समस्या है। प्रशासन की नैतिक मुद्दों को एक बार दौरान कार्य की जा 
टिप्पणी और वजन, प्रशासन की हत्या न कर सका गया है।

बिद्धता की मानकता है कि ब्राह्मणका को प्रभु का नाम में 
व्यक्ति प्रतिवाद कर नए कार, पुरी-परायण भिन्न, अन्तर और निष्ठा का 
उत्पन्न है। वाज द्याव एवं उत्पादन वाँचना पर पुरी-परायण का विकास 
है। अन्तर गरमा का, पुरी-परायण अन्तर का जोखम कर रहा है। राज रातों, 
टिप्पणी की ठोले, प्रस्ताव, रक-कम, दूतों के बाहर, एक बार दौरान कार्य 
में दौरान यह नये व्यक्ति को होता है। धार्मिक संस्कार में ब्राह्मणका ने विषय 
वाथ परिवार की सरकर एवं प्रखातों को प्रभुकित किया है। समाज में कलिकाता, 
अपराध और लोकार्थ को कम दिया है इसी धार्मिक विधान की प्रभुकित मिला 
है। ब्राह्मणका जो परिवार ने विनियमित विधान ने परिवारारिक विधान, कलिकाता को 
कम दिया है। धार्मिक विधान ने प्रभुकित, रिस्क, कोशी, अवाम की 
समस्या को कम दिया है। वाज दौरान की समस्या प्रभु है। गरमा बी 
उप-बाबु जैसे में, वातावरण, सामाजिक-सार्वजनिक नीति पैठों में इसका अभाव 
दृष्टिबाँध रहता है जिसके द्वितीयतापरायण की प्रभुकित समाज में कम है। इसी 
प्रभु बी वातावरण का कारण एवं वाज का कलिकाता दृष्टिबाँध है। धार्मिक, जैविक जैसे 
रिस्क, बच्चों के तथा ही नीतिक परिवार नाटकों में है। वातावरण बुझा, 
टिप्पणी की ठोले, अपने का, किसी का जोशा सुनती है,

है राष्ट्र है कि अफगान, भारतीय, बांग्लादेश, हिंदुस्तान, कर्नाटक, पंजाब, महराराष्ट्र जिनकी व्यक्ति की जनावर देवी हैं। इसी तरह मैं जनता-वाद के प्रतिकूल हूँ। बैकली की स्थायित्व नीति के आधारण के कारण है। "विनियमों" की एक कारारा "पूर्व-पौर्व", "सत्य क्षण", "प्रतीका", "विखंड़्व", में बैकली की समस्या परिसरित है।

'समकालीन चिंतित नाटकों में एक और राजनीति के बन्दीत व्यक्ति और बाहर की अभूतितत राजनीति, व्यक्ति और स्थान तनब में ब्लूटाका, न्याय व्यस्तता, राजनीति ने तंत्रचत् में व्यक्ति की प्रतिफलिता का बिविष्ट किया गया है।

वाज बिकार देशर में भूमतनात्मक वर्कर हैं जिसका बाहर लोक पत है। भारतजीवियों के बनासे भ्रातानीय कारकर में नेता का भुनाव जल्द समय करती है। प्रजासत्तात्मक नेता का उद्देश्य बन्दी निहित स्वास्थ्य और विनियमों के पूरा करना नाबलिका कक्षयारण करना होता है। नेता है जनता को केवल बेलकीत होती है वर्तमान क्षमता निर्धारण के कारण नेता की देश सर्वदा भारतिय प्रतिष्ठा होती है। नेता है अपना कुछ पूरा करने, बाहर प्रकाशित करने की दिशा रूढ़ी की बहस की जरूरी है। कर्मचारियों में नेता का भेंट या बड़ी की दिक्षाएँ नहीं है। नेता करने हासिललों एवं कारणों का पूरा करने की वजह में भारत अपने हितों को पूरा करने, का प्राप्त करने के लिए आमिरह मानकों को अनमोल में व्यस्त है। वाज की राजनीति के अनुसार राजनीति है वर्तमान के राजनीति में पुरातित प्रकृति कर चुकी है। नागर्मूलकों की अवधेषण ही हो रही है। अभूतितत राजनीति के कारण व्यक्ति स्वास्थ्य और जनता को पाने का होना ही गया है।

व्यक्ति का स्वयं बने स्वास्थ्य का पूरा करना और अपनी स्वातमत सुखों की रचना करना रख गया है। यह कुछ के "बेव्यक्तिपुर"; "भेदबाज" प्रस्तावित नाटक है। इसके लिए व्यक्तित्व, नेता है लघु नाना-मीठी, स्वास्थ्य, राष्ट्र प्रतिष्ठा की बातें निश्चित ही गयी हैं।
स्वतः प्राप्ति वोर स्वायत्त का कारण ही देख का नेतृत्व स्वायत्त विश्वास दृष्ट मार्ग वोरते व्यक्तित्व वाखा है। नेताओं के वरिष्ठ स्वायत्त की सीमाओं में राजनीति में जोकर होकर बुधी है । जान की राजनीति में यथार्थता सुन्नति राजनीतिकों का सम्बन्ध है।

वह कूदन की जीवनाओं के पार करता दुरा विरोधी व्यक्ति को मारते में चौ नहीं लिखा। राजनीति के स्वतंत्र पर भाजकों को बोल जातिवाद, सामाजिकता, गुरुवारी वादियों को प्रतिसाधन भिड़ रहा है। वाजन नेता मनुष्य की भाव क्या जानियों में बांट कर देखा है। वह उनके कात्याय में बपने स्वायत्त को लिखा है। नेता की क्षमा वोर तरी में बदल है। एक जो वोर जाकर करते हैं। दुरशी वोर वे दौर स्थान का किवा ज्ञान प्रस्तुत करते हैं।

नेता अपने राजनीतिक स्वायत्त के लिए युगा प्रति को भी गठ कराए जा जाता है जहाँ की नहीं, उनके दो पक्षाधिकारी चला है। ये हैं भूमि के नामक "भिम वन्मन्द्र, सब सत्य हरिश्चन्द्र, सम्य सांप, दुरशी वाइ भुट" है। निम्न स्तर की राजनीति स्वायत्त है। जहाँ का राजनीति व्यक्ति की वाक्यात्मक माता देता है। व्यक्ति विश्व वे काम न कैर स्वायत्त की गिरावट और उसकी पुरातता के लिए बाई कूदन की लिख करता है। "भुटमिना, भागमार, भागवता, भिषासन लाठी है, केशुलारण में ज्ञानवाड़ी वाक्य के लिए विषम खुश्चन्द्र करता है।

अन्य वोरों में भुट कहते हैं प्रति लिख का जाता है। राजनीतिक पार्टीमें निम्न स्तर पर उत्तर जाती है। व्यक्तित्व वाक्य, व्यक्तित्व पर कीजु उड़ाना, बन-बन के प्रदूषण हैं व्यक्तित्व को वपने वोर भिलाना, जुनारों में फिक जताजता जो कुटे वाक्य लेता है, हरा-स्रोता का जाता है बौट ग्राम करना, युक्ति को वपने जाता में फांसना वादि बाज के राजनीतिक प्राचार का सब नस बन गया है। "भिषासन लाठी है, भागमार, भागवता, भिषासन, सम्य सांप, जव गारी लाशी, "भुटमुं की हत्या" में जुनारों के कुटे है। बाज की राजनीति में उवाचारवादीणों का स्थान पिला है। सच्चे देशमुक्त स्वतंत्रता संग्राम के गानी उत्कृष्ट छुए है तथा बुधन जोर बोट स्थान जोर कुटी हिन्दूस्तानी की राजनीति में पारंपरिक व्यक्ति बाज की राजनीति में बा गए हैं। "भिम वन्मन्द्र, भिषासन, भिषासन"
की एक फार्स, 'षुतुरुण', 'दुःधरी वार्त', 'विढुरुण' नाटकों से यह स्पष्ट होता है।

वार्तालापिया अरुधार नैता में लाभ, कीर्ति, नेत्रिका, निर्मलारा ते गुण बावरक हैं। नैता का का उद्देश्य अपने नितिए स्वागत और नीतियों की पुणा करना नहीं बलिक वकल्याण करना होता है। नैता हे जनता अपने बाक्यों पुरे करने की बेदशा रहती है। यमकाल राजकीय में नैता का प्रजातावृत्तिक स्वयं वार्ता करने है। निर्मला नैता कल्याण की बेदशा अपने स्वागत नीतिर व्यक्ति है। अनुवानाषण के कल्याण की बेदशा अपनी प्रश्नी बनाए रखना और अपनी दौड़ाना करना की उसका कठिन है।' शमुक की हत्या, 'विनियम वार्ता है।' अदारिभार, 'दुरारी वार्ता,' एण्डुरुण,'' नागपाध,' बसर,' अब गरीबी दरीब,' 'निर्माण रूप का दुरुण,' 'षुतुरुण' नाटक नैता मे निर्मला नैता की उदयानस्तिक करते हैं।

उपरुख परिस्थितियाँ हैं कारण हमुकी परिषद दृष्टिकोण हो गया है। चारिय और रुष्टाचार का वौँताणा हो गया है। राजकीय प्रष्टाचार समुदाय विषय का कालान्तर है। जमवालिक विषय के राजकीय कार्यों में उभय व्यक्ति का उद्धृत्युण महोदाया, विद्वता राजकीय स्वागत नृत्स लहर है। राजकीय प्रष्टाचार के बनाति राजनीति विशेष, पुलिस, अर्थव्यवस्था, तथा तत्व साधारण बातें जो कानून लहर हैं। 'सम्बंध संविधा, 'विप्रको संविधा है,' 'मीम संविधा, 'विनियम वार्ता है।' राजनीतिक लिङ्गों का प्रष्टाचार है परं यह देखने की प्रसंगत है। 'विनियम 'शमुक की हत्या,' 'उदारी विश्लेषण' में विस्तार की प्रश्नी नृत्स लहर है। विद्वता के हाण में कानून होता है। तबियत पुलिस द्वारा रुष्टाचार का घूट करने के स्वागत पर रघु दीर्घ छिप्प है।

'निर्माण रूप का दुरुण,' 'शमुक की हत्या' में पुलिस विषय में प्रष्टाचार विषमान
हे! इस प्रस्तावक की प्रकृति के कारण चालू हुई, कमाली, लनाच और नया को बदला भिड़ा है। "दिली के ऊंचा हुलती हुए, "रक्षणवत, "बब गरीबी हराओ; "दुर्गारिशाई" में यह प्रभुविविध उत्तेजित है। समझाये के अनुसार कनून सामाजिक निःशुल्क का पहले पुर्खी शाखा है। कनून व्यक्ति के वाक्यांश, दायित्वादृष्टि और कार्य करने के तरीकों की व्याख्या करता है। कनून वे मिथ्या है जिन्हें न्यायाधीश द्वारा पालनी प्राप्त होती है। कनून का उद्देश्य जनता की विभिन्नका दुर्गनिश्चय निर्माण करना है परंतु वाज की कनून व्यवस्था से जनता को ऊपर को लांच है। कनून का उद्देश्य विभेद हो रहा है। न्याय व्यवस्था जिसमें प्रस्तावक की रूपक से दूर मिटी की, बब पुरीत: पुरी है। कनून में पुरीक हुए तक ही ही भिड़ा है, न्याय वे उत्कर कोई सम्पर्क नहीं है। न्यायाधीशों में न्यायाधीश घृघ-प्राप्त करते हैं। वे वन्निस्क न भंविन्दिया देते हैं। वुल्जुसारये: "रक्षण: डे रकरी" में न्याय व्यवस्था पुर्ध है। न्याय-व्यवस्था की तरीक की पुरीत व्यवस्था पी पुर्ध है। समारोह के राजनीतिक व्यवस्था में बाजीका परिदृश्य कर दिया गया है। पुरीत राजक के स्थान पर प्रति वन नैतिक मूलम का प्रभाव कर रही है। "नगरहु "बब गरीबी हराओ; "नागपाण; "परीनथ" पुरीत के कामनीव मौर वाणिज्य लेख को उद्धार करते हैं।

पुर्ध भावनाएँ यह परिवेश ने व्यक्ति को अन्वेषण कर दिया है। प्राची की अगवाता मैं उसे न्याय के लिए मनमो करने को परछर किया है। राजनीतिक व्यवस्था के मिलोप में व्यक्ति के विषय के स्वर पूरे हैं। ताही, व्यक्ति के विषय के बीते के पालनी द्वारा प्रभाव किया जा रहा है जिससे व्यक्ति के व्यक्तित्व का प्रभाव और व्यक्ति में राजनीतिक परिवेश के प्रभाव भूल देखा है। ऐसे नवर्ण को उद्धारित करने वाले नाटक में लेखन, "नागर-कुलाक लिस्टरक, "पुर्ध के विषय के संचन किरण ते फहरी किरण तथा; "मिह बामनानु "बब गरीबी हराओ; "विभागः "पुर्धुम "रक्ष-गन्य" विभेद उद्दीयो है।
संसाधनिक युग में जीनें के प्रत्येक हेतु में राजकीय व्यक्ति ही कुकिं हैं। प्रजातन्त्रीय ज्ञान में व्यक्ति का राजकीय तत्व ही हिन्दा सम्प्रभु होने के कारण ज्ञानार्थ के लिए ज्ञान चर्चा का विषय अन गया है। ज्ञान व्यक्ति राजकीय तत्व के केवल प्रशासनिक, व्यवस्थापित नीतियों की कार्य, सरकार की एकसम्बन्धी, राजकीय विषयों का नीतिवंशक करता है। ज्ञान क्षेत्र में व्यक्ति के अधिकारों की पात्रता व्यक्ति का विश्वविद्यालय जायता है। ज्ञान स्वयं का राजकीय तत्व का अंग माना जा रहा है।

नाटकों की संसाधनिक युग में, अंकारंग नृत्यांग के व्यक्ति के नर-नारिक हस्तक्षेप नृत्य प्रभावित, व्यवस्थापित नीतियों के साथ नृत्य, योग-नैतिकता, एवं व्यवस्थापित सम्बन्धों के सम्बन्ध में ज्ञान की स्थिति का निर्माण किया गया है।

संसाधनिक विनिमय के अनुसार परिवर्तन की तत्त्व प्रभावित के नर-नारिक का प्रभाव वापसिक है। कार्य एवं सामाजिक मूल्य पर पड़ता है जिसके कारण व्यक्ति को नृत्य परिवर्तनों में संप्रभुत करने के लिए व्यवस्था उत्पन्न होती है। प्रजातन्त्रीय पारंपरिकताओं का नागरिक व्यवस्थापित नृत्य के संबंध में ज्ञान की स्थिति उत्पन्न करता है। कर्मनाल ईमान में ज्ञान अतिरिक्त नृत्य के साथ संबंधित के पात्रता की बनती है। इस कारण संसाधनिक विशेष नाटकों में ज्ञान की स्थिति परिवर्तित होती है। नृत्य परिवर्तनों में परिवर्तन के कारण मूल्यों में भी परिवर्तन आया है जिसकी पुरानी मूल्यों के स्थान पर नृत्य मूल्यों की स्थापना हुई है। परिवर्तनीय सम्बन्धों का पुराने स्थापित नृत्य की शैली तक मूल्यों जान पहले ला है। संसाधनिक विनिमय के दृष्टि में परिवर्तन शिक्षा एवं संस्कृति के प्रभाव, निर्माण-प्रसार, नृत्यवादी बांध्यान, लालापटरा, वायुविज्ञानिक मूल, नैतिकता और अधिकारों के नर-नारिक सम्बन्धों में ज्ञान की स्थिति है, ज्ञान स्वयं-पूर्ण के सम्बन्ध में स्वयं का मानना है। ज्ञानित्व नारी पुलमुक
उन्नता का सम्बन्ध स्थापित कर हर भैरव में वास केहूं रहकर है। वाज वह जीवन की नयी दिशा पृथक कर रहकर है। वह पूर्णता से संस्कृति की नहीं काफी बलि वर्ते शीर्षण का कदम है। देव को वाज के लिए पति को परवर्तक न नाम कर, उसके वत्सावरों का न्योकार करती बलि उसका विरोध कर रही है, इसीलिए वह पूर्णता से अपने सम्बन्ध भी तोड़ रही है।

नाटकों में रचियां हैं लेखनी की नहीं कार्य, बलि वायुषिक का बनाता नये पुलियों ने सरनी की और भी गलियों उड़ते होते हैं। "माहिती" की पौड़ी, देवयानी का खलना है; की देवयानी, "किना झारखंड" के घरे की शोभा, मना, "किना झारखंड" के घरे के "नरन न भ्रमण" की दया, वान-बुरों की घाटियां, "सेवक" की प्राकृति, "बूढ़ा" की बलि किरण से पहले किरण तक" की बीमारी ने पूर्णता के प्रति खिड़की किया है व्यंग्यिक कह उसकी स्वतंत्रता की बांट देने की तैयार नहीं है।

स्वतंत्रता की मात्रा के कारण नारी पुरस्कार की बनने स्वप्न माननी छैं। वाज विवाह संस्था के पालनरूप स्वप्न के भावार्थिक नारी मुख्य-विशेषज्ञों, विवाह-विचेत, नारी की उत्तम विधा, वाजनितिक, रचियों का दूर, नये पुलिये की स्थापत्य और पारंपरिक संस्कृति के तैयार है वह दूर दूर प्राप्त एक प्रति पिंड ला हार दिया है। परिवार एकांका और उसके प्रकाशों में काबिज बनने है भी विवाह-विधा की आवश्यकता में बनार बनाया है जिसके फलस्वरूप पालनरूप स्वप्नों में परिवर्तन जाया है। विवाह को वाज एक परिप्रेक्ष्य धारितिक बनता, जो कि बाहु, न नाम कर उसे एक समकक्ष पाना गया है। यह समकक्षा न रहने पर तोड़ा भी जा गया है। वाज विवाह के बनने में भागनात्सा के स्थान पर व्यावहारिक का समावेश बलि है। इस एलानी दूर-दूर की रात-राती, देवयानी का खलना है। नाटकों में उद्धृत किया गया है।
यों-नैनिक तृणाम में हस्रत विवाह की संख्या की संख्या है। अब की फिरी जीवन में हमें मनमोहक हरा का योन स्थानानुपूर्व के पतावर है। वे सामाजिक बन्धनों की जोड़ का पूरा योन स्थानानुपूर्व का उपस्थित न होते हैं। अब की नारी के परिप्रेक्ष्य पर्यायमात्र नान्दन के अवस्थित असम्भव का खुल कर सँपने करने लगी है। इसके रूप में वायुयोक्ति तनमा, मौँक्लम, मूल्य, बौनिककरण आदि प्रमुख कारक हैं। विवाहित योन सम्पन्नान्त व विवाहितयुवा योन सम्पन्नान्त का प्रमूख मिला है जिसके वैदिक एवं पारिवारिक विश्व की जन्म मिला है।

वोह आर्थिक, तोड़की, 'बुद्धी की अवस्थितिः' तक प्रकाश करते 'देवयानी का कहना है: 'जन्ने के बेटा, 'सबबुद्ध' 'योजत कृष्णकुली' नाटकों में इस परिप्रेक्ष्य का उद्धारित किया गया है।

अब फिता-पुन हस्तान्तर्वर्त्त में हस्तान्तर की संख्या है। हस्तान्तर हस्तान्तर में कठाव और लन्त्र का कारण वेतनातिक वन्य, पारिवारिक वन्य, नामच, और व्यक्ति स्थानानुपूर्व की पागलता है। 'बुद्ध-युक्ति, 'तीयता वाही: 'विवाह दीवारों' के ध्वनि विविधता की एक काटर; 'दुर्योद्योतक' नाटक प्रमुख हैं।
उपरोचित श्रावन के द्वारा कर गितखिल फर्मान है। यह द्वारा के
किसी एक फार्मान का सम्बन्ध न कर उसके साधन शताब्दी का लोक
व्यय करता है। सत्याश्रय, श्याम और समाज का छपना नुसूस के साधनीक
लक्षण, सत्याश्रय, संस्कृत, सामग्री परिषद्री एवं क्रियाएँ, विभिन्न
संस्थाएँ, विभिन्न सामाजिक प्रभावों, पुरुषों का व्यवहार करता है। सत्याश्रय
साहित्य की पारंपरिक साहित्य की पुनरावृत्ति: पारंपरिक साहित्य के संबंध
साहित्य और समाजशास्त्र के दूर दूर के पुरुषों के दूर से साहित्य व आधुनिक
विभिन्न संस्थाएँ एवं समाजों, उसके सम्बन्ध एवं परिवर्तन का क्रमबद्ध प्रयास
करता है।

साहित्य की वागारमूल संस्थाएँ, उनके परामर्श प्राप्त संस्थाएँ वें
वा रहे परिकर्ता स्वाधीनता लक्ष्य है विशेष पक्ष रहते हैं जिसका विश्लेषण उपकारी नाटकों में हुआ है। परिकर्ता की तीव्र प्रक्रिया का प्रारम्भ सामान्य रूप से, कार्य एवं मूल्यों पर पड़ता है। जौयाँवारीकरण एवं नारीकरण के विकास व्यंग्य प्रशान्त ने परिकर्ता की तीव्र गति प्राप्त नहीं है जिसके समृद्ध समाज की संरचना प्रभावित हुई है। स्वातंत्र्यवाद का प्रस्ताव परिकर्ता की प्रक्रिया लक्ष्यित तीव्र गति है हुई है। जौयाँवारीकरण के व्यंग्य है समाज में सामान्य के विचार उपस्थित हुआ है। प्राणी क्षेत्र में शरीर-परिवर्तक की जीवन साधन चुनाव ने प्राणी एवं नवीन मूल्यों के मध्य संघर्ष की स्थिति उत्पन्न की है जिसके के व्यंग्य के साथ दुःख: अनुभुन की स्थिति उत्पन्न हुई है। नयी प्राणीत्विकी ने व्यंग्य परिवर्तक एवं संड्याह के बनाते परिवर्तक एवं संड्याह के बनाते विचार की स्थिति को उपस्थित किया है।

वैयक्तिक विचार नारीकरण विचार का अहंकार है। जै व्यंग्य के व्यंग्य-केला में उन त्साहा का उपास उवले लगता है जो उसके व्यंग्य का निर्देशन करते हैं। उसका व्यंग्य विचारित व्यंग्य है। व्यंग्य उपर्युक्तताओं व्रतिकारण और मूल्यवादी है यथेष्टता सामान्य मूल्यों है विचारित हैं जाता है। वैयक्तिक और मूल्यवादी जीवनरूपकला व्यंग्य वैयक्तिक विचार का उपास है। वैयक्तिक, वैयक्तिक, वैयक्तिक, वैयक्तिक, वैयक्तिक, वैयक्तिक विचार को उपास है। वैयक्तिक के उपास है उपास है जो प्राणी समुद्र में वैयक्तिक विचार की स्थिति विचार में हुई है। नाटकों के उपास है उपास है कि नाटकों में वैयक्तिक विचार के उपास है उपास का अहंकार की उपास है जिसका को नीतिक सामाजिक का प्रयोग कर रहा है। वृद्धवादी, कैप्टनपुस, बिहारी, बिहारी, बिहारी, बिहारी, बिहारी, बिहारी परिस्थिति नाटकों में वैयक्तिक विचार के उपास का निर्माण है।
प्रतिविधित नाटकों में दैवतिक विघटन के प्रमुख हप्तों को व्याख्या नहीं मिला है।

पारिवारिक विघटन लाभार्जिक विघटन का हप है। विभिन्न नाटकों
के जल्द होता है यथा पारिवार लाभार्जिक की विधि में है।
विभिन्न नाटक जारी,
विवाह, पारिवार एवं माननीय सम्बन्धों में विकल्प होता है जिसे जीवन मूढा तथा
परिवारों पर ही मुख्य; केन्द्रित हुए है। लाभार्जिक दंडना में जारी, विवाह
एवं पारिवार जायामूढ़ लक्षाया है। इन में शल्यशुद्ध परिवारी हुए हैं जिनका
परिश्लेषण प्रतिविधि नाटकों में है। जौनपुरिकरण की प्रक्रिया, नारी स्वातन्त्र्य
की मार्गवा, नौकरियाँ के लेना, पारस्य गोपक एवं संसूति के युगम हें कारण
विवाह एवं पारिवार की संस्कृति में परिवर्तित जाता है। जौनपुरिकरण एवं
कार्यरत्न ने परिवारों को विविधता की बृद्धि हुई है।
विवाह की वातान्त्रिक स्वतंत्रता मिली है। दिशाओं में वातान्त्रिक स्वतंत्रता के साथ
जागरूकता और अभिविलयों के प्रति अर्थ सुरू है। इस कारण आते विवाह-पत्नी
वस्तुओं में लागू विधान है जिससे परिवार विघटन की विधि में है। परिवारों
में दुःख की विधि है जो पारिवारिक विघटन का विस्तार है। इन
हें कुछ रूप में के साथ, वृद्धि स्वातन्त्र्य, उन्नत यीतेन स्वातन्त्र्य, नारी का वातान्त्रिक
अर्थ एवं आर्थिक निर्भरता होने, विवाह-पत्नी का सम्बन्ध-पत्नी होना एवं विधि इत्यादि हुए मुख्य हैं।

जौनपुरिकरण की प्रक्रिया के विवाह के पर्याप्त दशक में की
परिवर्तित गया है। विवाह की एक वातान्त्रिक बनन व पति-पत्नी का जटाते बनन
न मान व धार्मी एवं सम्बन्धचार नामा जाने लगा है, जिन्होंने न भिन्ने पर तटस्थ की
प्रक्रिया द्वारा तौला जा करता है। विवाह की युक्ति पीड़ित एक व्यक्तित्व वापस
पानी है। जीवन राशि जब में स्वातन्त्र्य की मार्गवा छुपाता है। मातारकान्तिके तथा
माता-पिता के विवाह स्वयं निरीक्षण की चारणा कार्यित है। विवाह की
पर्याप्त नान्दारों में परिवर्तित है। विवाह पूर्व यीतेन सम्बन्ध, विवाहीतर
यीतेन सम्बन्धों को पुभ घटाया है। अन्तरात्मिक विवाह, विवाह, विवाह, अन्तरात्मिक
विवाह की मान्यता पिछा है। इन सभी का निपटन एवलकेतीन नाटकों में हुआ है। विवाह की संस्था परंतुतती की प्रक्रिया में है। उसकी परम्पराएं तत्पर से बदल रही हैं। वेताकविक सम्भावनाओं में तनाव के कारण पति-पत्नी बला रहते हैं। पाप विवाह के प्रति अनैतिक भूलत होती है। तत्व होने पर वी विवाह के महिमा के लिए ती करना नहीं है। नाटकों में एहे ती पता है जो विवाह संस्था के प्रति वास्तव रहते हैं। जिनमें परम्परातीत पारसी की विवाह की मान्यताएं वाज भी विपण हैं।

एवलकेतीन नाटकों में सामुदायिक विवाह की उपस्थित है जिसका नाटक-कार्य ने जीवन किया है। सामुदायिक विवाह लुप्तप्राय में व्याप्त अवस्था की स्थिति का बाहुल करता है। निर्यात, बेकारी, उपरा, युवतीसंपर्क, मितापुरुष, राजनीतिक प्रभाव, त्योहार, सामाजिक, उत्तीर्ण एवं नकोकिएक, सामुदायिक, सामुदायिक विवाह के हेड है। नाटकों में सामुदायिक विवाह के बस्तुवर्त, सामुदायिक, मितापुरुष का छोटा कर लिए हयों का प्रति हुआ है।

बौधीकिरण की प्रक्रिया समाप्त है जो वार्तित परिवर्तन उपर्युक्त किए है। उनकी क्रांतिं देशा निर्वाहित नहीं की जा सकी। वहे पैमाने पर उत्तराधिकार, अम-विलास, कह-कहां, वौधीकिरण दुश्कुलनार, बेकारी, हङ्गार बौधीकिरण के फःस्ट कर है। प्रशिक्षित नाटकों में बौधीकिरण एवं प्रशिक्षित विवाह को स्थायि नहीं पिटा है। नातक का वौधीकिरण उपर्युक्त-वन्यों का विवाह, वौधीकिरण की विवाह, एवं विद्यमान विकल्प का चित्रण नाटकों में नहीं है। वौधीकिरण विवाह है उपर्युक्त वृम्भ का बाँध उनकी एस्थायल, का चित्रण भी नाटकों में नहीं है। बाज बौधीकिरण के कारण वृम्भ का बाँध उनकी एस्था महत्त्व रहती है। प्रशिक्षित नाटकों में वृम्भ-ब्रम्म, स्त्री-ब्रम्म को पी रस्मि नहीं पिटा है। नाटकों में कहा संस्था का चित्रण पाल्यात्माता में
हां है। वास्तव में यह मान्यता रही है कि का संगीत सदैव विकास रहा है। वाचकों के कारण कमाल नए कार्यों में विकसित है। वृत्ति पाति और तत्त्वभी की शर्म का शोषण है। स्वायत्तता में इस दृष्टि से गति का काम हुआ है और सांस्कृतिक वातावरण के जीवन संबंधी धर्म का चित्रण कुछ नए कार्यों में है। नए कार्यों में बड़े बड़े संगीत रचनाएं उनकी एकता का अंश नहीं है। किंतु नीति नए कार्य नहीं है जो का संगीत को वातावरण का कार लिखा गया है। भारतीय समाज में निकृष्टता और बेड़ाता में बटती है। इसलिए उपन्यास का चित्रण काल में है जिन्हें उनके निवारण हैं। लिखित नए कार्य का परिणाम सामान्य विषय है।

देश की राजकीय में नीति विश्लेषन है। राजकीय विषय है। जनवादी अन्वेषण के बारे में वाक्य रहे हैं। स्वायत्तता, सत्यांतर कह दिया गया है। निरंतर नेतृत्व की गति मिली है। उन्नति का प्रभाव हुआ है, जब देश बना नेता की चित्रण लगा है। राजकीय व्यक्तित्व नैसर्गिक है, मजी से विवेक तक खुशियों का प्रभाव है। नया व्यक्ति वन्यज्ञान है, राजकीय व्यक्ति है राजकीय व्यक्ति में वाक्यों का प्रत्यय में लिखा गया है, इन लोगों व्यक्तियों का चित्रण काल में है है उन जस्ते लोगों को एकता में नहीं है। देश की मानसिक तत्काल, क्रिया का प्रत्यय व्यक्ति का एकता में है, इसका स्पष्ट रूप ज्ञात करना है।

विलियम के दौरान में नीति विश्लेषन हैं। वाक्य में प्रायोगिकों के प्रति नहीं है। वृद्धि में व्यक्तित्व के प्रति अनुसंधान करना, उनका कार्य का चित्रण देखना। इसका सन्तोष में व्यक्तित्व का काम, उच्चविद्यालय के व्यक्तित्व, देश नए कार्य की संस्कृति को नए कार्य में स्थान नहीं मिली है।
8.3 दौष्टःशृङ्खला

प्रस्तुत दौष्टःशृङ्खला की परीक्षामूलक समाजशास्त्र की वाक्यार्थ वर्णन करना के बाद के नाटकों का उपयोग किया जा सकता है। किसी एक नाटक का प्रस्तुत नाटक का समाजशास्त्रीय उद्देश्य किया जा सकता है। यही रूपाकार की कस्तो नाटकवाद का साथ समाजशास्त्रीय उद्देश्य उपयोगी हो सकता है।